श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान परिचय Answer Sheet

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ 2020-21

ऐनरोलमेन्ट नंबर अभ्यास-2 शहर ______

विद्यार्थी का नाम ______

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	के विज्ञान
(२)	चार घडी
(३)	गमिक श्रुतज्ञान
(४)	सुख
(५)	व्यंजन अवग्रह
(६)	अहिंसामय
(७)	उपांशुजाप
(८)	अनाश्रुत
(९)	सद्भद्र
(१०)	भतपाणव्यवच्छेद
(११)	सात सागरोपम
(१२)	सुख-दुःख
(१३)	निरुपक्रम
(१४)	दान
(१५)	आत्मानुभूति
(१६)	निषध
(१७)	अणुव्रत
(१८)	अवधिज्ञान
(१९)	पापकाविनाश
(२०)	भयभित

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	दो इन्द्रिय
(२)	श्री नंदिषेणजीमुनी
(३)	हेतुवादोपदेशिकी
(४)	मनअपाय
(५)	छाहुंउपारनेछाहु
(६)	सद्गति
(७)	लब्धक्षर श्रुत
(८)	महाविदेह
(९)	शंकर
(१०)	आध्यात्मिक लाभ
(११)	अंगबाह्य-श्रुत
(१२)	बंध अतिचार
(१३)	भाष्यजाप
(१४)	शांतिनाथ भगवान
(१५)	समकी विहार
(५)	उपमा सहित
(६)	परिधि
(७)	तिरसठ
(८)	रोग
(९)	निषध
(१०)	अपेक्षा से
(११)	सदा / हमेशा
(१२)	दुसरी तरफ के
(१३)	व्यंजनावग्रह
(१४)	मति
(१५)	विस्तारवाले
(१६)	अथवा
(१७)	कीर्तन
(१८)	सादि
(१९)	अर्थावग्रह
(२०)	एक सौ नब्बे

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	धीरज
(२)	प्रमाण
(३)	श्रुत
(४)	हरिवर्ष

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	८	(६)	९
(२)	५	(७)	६
(३)	१०	(८)	४
(४)	७	(९)	३
(५)	2	(१०)	१

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	९२
(२)	20
(३)	32000
(४)	२८
(५)	८०८०८८०८
(६)	30
(७)	५२६
(८)	९६
(९)	१०८
(१०)	६

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	✓	(१)	५
(२)	×	(२)	23
(३)	×	(३)	१४
(४)	×	(४)	3
(५)	×	(५)	१८
(६)	✓	(६)	४
(७)	×	(७)	१०
(८)	×	(८)	20
(९)	✓	(९)	११
(१०)	×	(१०)	१६

+ + + + + + + =

प्रश्न-१ मिले हुए गुण | प्रश्न-२ मिले हुए गुण | प्रश्न-३ मिले हुए गुण | प्रश्न-४ मिले हुए गुण | प्रश्न-५ मिले हुए गुण | प्रश्न-६ मिले हुए गुण | प्रश्न-७ मिले हुए गुण | प्रश्न-८ मिले हुए गुण | कुल गुण

रीमार्क ______ जांचनेवाले की सही ______

प्रश्न - ८

१. यह क्या है? ऐसा विचार करना वह इहा। इहके ६ भेद है। यह किसी स्त्री की आवाज है ऐसे विचार करना वह श्रोतेन्द्रीय इहा है। यह वृक्ष है या कोई मनुष्य ऐसी विचारणा करना वह चक्षुरिन्द्रिय इहा। यह गुलाब की सुगंध है या केवडे की ऐसी विचारणा करना वह घ्राणेन्द्रिय इहा। यह गुड है या शक्कर ऐसी विचारणा करना वह रसनेन्द्रिय इहा। यह साप है या रस्सी ऐसी विचारणा करना स्पर्शेन्द्रीय इहा। "उस स्वप्न में क्या देखा" यह विचारणा मन इहा है। इसके द्वारा संभवित की वस्तु का निश्चय करना अपाय है। इसके ६ भेद है। यह तो स्मिता मुझे बुला रही है ऐसा निश्चय होना वह श्रोतेन्द्रिय अपाय। कोई वस्तु स्थिर है हिलती-डुलती नही यह तो वृक्ष है ऐसा निश्चय ज्ञान होना वह चक्षुरिन्द्रिय अपाय। यह गुलाब की ही सुगंध है, यह घ्राणेन्द्रिय अपाय, यह गुड नही शक्कर ही है ऐसा निश्चय रसनेन्द्रिय अपाय। यह रस्सी नही पर सांप ही है। वह स्पर्शेन्द्रिय अपाय। मैंने स्वप्न में मंदिर ही देखा यह निश्चय मन अपाय है।

२. अनेक लब्धियों के निधान इन्द्रभूति गौतम लब्धि के भंडार थे, एक पात्र में अंगूठा रख १५०० तापसों को पारणा कराया था। सूर्य की किरणों को पकड अष्टापद तीर्थ चढे। जंघाचारण लब्धि वगैरह अनेक लब्धियां उनके पास थी। "केवलज्ञान केवलरूप हुओरे" वे जिसको दिक्षा देते उसे केवलज्ञान होता था, त्रिपदी पाकर द्वादशांगी के रचयिता और १४ पूर्व के ज्ञाता गौतम छद्मस्थ काल से ही थे।

३. भरतक्षेत्र में एक, हिमवंत पर्वत में दो, हिमवंतक्षेत्र में चार, महाहिमवंत में आठ, हरिवर्ष में सोलह और निषध पर्वत में ३२, ये सब मिलाकर ६३, दूसरी तरफ के (ऐरावत की ओर से) तिरसठ (६३) और विदेह के ६४ ऐसे कुल मिलाकर १९० खंड है। भरत क्षेत्र के साथ हिमवंत पर्वत, हिमवंत क्षेत्र है, वैसे ही महाहिमवंत पर्वत और हरिवर्ष क्षेत्र है, वैसे हि निषध पर्वत है।

४. नवकार मंत्र तो सब मंत्रो में सर्वश्रेष्ठ मंत्र है। हमारे रोज के दैनीक कार्य यानि निद्रा त्याग करते ही सर्वप्रथम हम नवकार महामंत्र का स्मरण करते है बाद में हम हमारे दैनिक कृत्य करते है। हम नवकार महामंत्र की माला गिनते है। नवकार मंत्र तो हमेशा हम स्मरण करते है। यह मंत्र ही हमे तारनेवाला महामंत्र है। इस मंत्र की साधना से हम अपनी आत्मा को शुध्द बना सकते है। इस मंत्र के स्मरण से हमारे जिवन के संकट, भय, पाप हम नष्ट कर सकते है। हमें हररोज नवकार महामंत्र की साधना करना ही चाहिये। एवं हम हमेशा करेंगे।

५. प्राणातिपात विरमण व्रत के ५ अतिचार है - (१) बंध - मनुष्य तथा पशु आदि के प्रगाढ बंधन में बांधना। (२) वध → जीवो को जोरदार प्रहार कर घायल किया हो या वध हो गया हो। (३) छविच्छेद → जीवों के नाक, कान, पूंछ वगैरह अंगो को काटा हो। (४) अतिभार आरोपन → बैल, घोडा, ऊंट के उपर अतिभार लादकर चलाया हो। (५) भतपाणव्यवच्छेद → अपनेपर आश्रित मनुष्यो तथा पशुओं को समय अनुसार खुराक पानी दिया न हो। यह पांच अतिचार दोष पहले व्रत में लगाना नही।